मेरे बचपन के दिन

जीवन परिचय

श्रीमती महादेवी वर्मा

महादेवी वर्मा का जन्म 26 मार्च सन् 1907 को फर्रूखाबाद (उ.प्र.)के संभ्रान्त कायस्थ परिवार में हुआ था। आपकी प्रारंभिक शिक्षा इन्दौर में हुई। प्रयाग विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम. ए. करने के पश्चात् प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्राचार्य रहीं।

महादेवी वर्मा जी को अपनी रचना 'नीरजा' पर पुरस्कार मिला। आपने 'चाँद' मासिक पत्र का सम्पादन भी किया। आपकी विविध साहित्यिक, शैक्षिक तथा सामाजिक सेवाओं के लिए भारत सरकार ने पद्मभूषण से अलंकृत किया । वे एक कुशल चित्रकार भी थीं। महादेवी जी की रचित मुख्य रचनाएँ नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा, यामा, अतीत के चल चित्र, पथ के साथी आदि पाठकों को अपनी ओर खींच लेती हैं। महादेवी जी का निधन 11 सितम्बर सन् 1987 को हुआ।

महादेवी जी की भाषा अत्यंत प्रांजल, प्रौढ़ और स्पष्ट है। शब्द चयन अद्भुत है। शब्द छोटे, भावव्यंजक तथा अर्थ गौरवपूर्ण रहते हैं।

केन्द्रीय भाव :- संस्मरण किसी व्यक्ति के स्मृति चित्र होते हैं। महादेवी वर्मा एक श्रेष्ठ कवयित्री होने के साथ-साथ संस्मरण और रेखाचित्रों की सिद्ध लेखिका भी हैं ।'मेरे बचपन के दिन' संस्मरण में उन्होंने अपने बचपन के दिनों का पारिवारिक वातावरण, शिक्षा तथा सामाजिक सम्बंधों का भावपूर्ण चित्रण किया है। प्रस्तुत संस्मरण में तत्कालीन परिस्थितियों, भाषा बोली तथा धर्मों के समरसता युक्त स्वरूप की झलक है। संस्मरण में स्वतंत्रता आन्दोलन के उल्लेख के साथ -साथ बापू द्वारा दिए पुरस्कार में मिले चाँदी के कटोरे को माँग लेने का प्रसंग अत्यंत भावुक है । यह प्रसंग बाल - मनोविज्ञान की सूक्ष्म अभिव्यक्ति है।

संस्मरण में सुभद्रा कुमारी चौहान के साथ बीते पल जहाँ उस समय के साहित्यिक परिवेश को व्यक्त करते हैं वहीं जेबुन्निसा और जवारा नवाब के परिवार के साथ उनके सम्बन्धों में सर्वधर्म समभाव की भावना परिलक्षित होती है।

मेरे बचपन के दिन में महादेवी वर्मा ने अपने बचपन के उन दिनों को स्मृति के सहारे लिखा है जब वे विद्यालय में पढ़ रही थीं। इस अंश में लड़कियों के प्रति सामाजिक रवैये, विद्यालय की सहपाठिनों, छात्रावास के जीवन और स्वतंत्रता आंदोलन के प्रसंगों का बहुत ही सजीव वर्णन है।

बचपन की स्मृतियों में एक विचित्र - सा आकर्षण होता है। कभी-कभी लगता है, जैसे सपने में सब देखा होगा। परिस्थतियाँ बहुत बदल जाती हैं।

अपने परिवार में मैं कई पीढ़ियों के बाद उत्पन्न हुई। मेरे परिवार में प्राय: दो सौ वर्ष तक कोई लड़की थी ही नहीं। फिर मेरे बाबा ने बहुत दुर्गा पूजा की । हमारी कुल-देवी दुर्गा थीं। मैं उत्पन्न हुई तो मेरी बड़ी खातिर हुई। परिवार में बाबा फ़ारसी और उर्दू जानते थे। पिता ने अंग्रेजी पढ़ी थी। हिन्दी का कोई वातावरण नहीं था।

महादेवी वर्मा की लेखन शैली के तीन रूप दिखाई देते हैं, ये विवेचनात्मक, विचारात्मक, और कलात्मक हैं। उनकी शैली गंभीर चिंतनप्रधान और विश्लेषणात्मक है। छायावाद तथा रहस्य वाद धारा में प्रसाद पंत और निराला के साथ, महादेवी वर्मा एक प्रमुख कवयित्री मानी जाती हैं। गद्य एवं पद्य की धाराओं को अत्यधिक सचेतना के साथ प्रवाहशील बनाने वाले साहित्य सृष्टाओं में महादेवी जी का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है।

मेरी माता जबलपुर से आईं तब वे अपने साथ हिंदी लाईं। वे पूजा पाठ भी बहुत करती थीं। पहले-पहले उन्होंने मुझको 'पंचतंत्र' पढ़ना सिखाया।

बाबा कहते थे, इसको हम विदुषी बनाएँगे। मेरे संबंध में उनका विचार बहुत ऊँचा रहा । इसलिए पंचतंत्र' भी पढ़ा मैंने, संस्कृत भी पढ़ी। ये अवश्य चाहते थे कि मैं उर्दू - फ़ारसी सीख लूँ, लेकिन वह मेरे वश की नहीं थी। मैंने जब एक दिन मौलवी साहब को देखा तो बस, दूसरे दिन मैं चारपाई के नीचे जा छिपी। तब पंडित जी आए संस्कृत पढ़ाने। माँ थोड़ी संस्कृत जानती थीं गीता में उन्हे विशेष रुचि थी। पूजा-पाठ के समय मैं भी बैठ जाती थी और संस्कृत सुनती थी। उसके उपरांत उन्होंने मिशन स्कूल में रख दिया मुझको। मिशन स्कूल में वातावरण दूसरा था, प्रार्थना दूसरी थी। मेरा मन नहीं लगा। वहाँ जाना बंद कर दिया । जाने में रोने-धोने लगी। तब उन्होंने मुझको क्रास्थवेस्ट गर्ल्स कालेज में भेजा, जहाँ मैं पाँचवे दर्जे में भर्ती हुई । यहाँ का वातावरण बहुत अच्छा था उस समय। हिंदू लड़कियाँ भी थीं, ईसाई लड़कियाँ भी थीं। हम लोगों का एक ही मेस था। उस मेस में प्याज़ तक नहीं बनता था।

वहाँ छात्रावास के हर एक कमरे में हम चार छात्राएँ रहती थीं । उनमें पहले ही साथिन सुभद्रा कुमारी मिलीं। सातवे दर्जे में वे मुझसे दो साल सीनियर थीं। वे कविता लिखती थीं और मैं भी बचपन से तुक मिलाती आई थीं। बचपन में माँ लिखती भी थीं, और गाती भी थीं। मीरा के पद विशेष रूप से गाती थीं सवेरे 'जागिए कृपानिधान पंछी बन बोले'। यही सुना जाता था प्रभाती गातीं थीं। शाम को मीरा का कोई पद गातीं थीं । सुन सुनकर मैंने ब्रजभाषा में लिखना आंरभ किया । यहाँ आकर देखा कि सुभद्रा कुमारी जी खड़ी बोली में लिखती थीं। मैं भी वैसा ही लिखने लगी। लेकिन सुभद्रा जी बड़ी थीं, प्रतिष्ठित हो चुकी थीं। उनसे छिपा-छिपाकर लिखती थीं मैं। एक दिन उन्होंने कहा 'महादेवी, तुम कविता लिखती हो ?' तो मैने डर के मारे कहा, 'नहीं।' अंत में उन्होन मेरी डेस्क की किताबों की तलाशी लीं और बहुत सा निकल पड़ा उसमें से । तब जैसे किसी अपराधी को पकड़ते हैं, ऐसे उन्होंने एक हाथ में कागज लिए और एक हाथ से मुझको पकड़ा और पूरे होस्टल में दिखा आईं कि ये कविता लिखती है। फिर हम दोनों की मित्रता हो गई । क्रास्थवेस्ट में एक पेड़ की डाल नीची थी। उस डाल पर हम लोग बैठ जाते थे। जब और लड़कियाँ खेलती थीं तब हम लोग तुक मिलाते थे। उस समय एक पत्रिका निकलती थी-'स्त्री दर्पण'-उसी में भेज देते थे। अपनी तुकबंदी छप भी जाती थी। फिर यहाँ कवि सम्मेलन होने लगे तो हम लोग उनमें जाने लगे। हिन्दी का उस समय प्रचार प्रसार था। मैं सन् 1917 में यहाँ आई थी। उसके उपरांत गांधी जी का सत्याग्रह आरंभ हो गया।और आनंद भवन स्वतंत्रता के संघर्ष का केन्द्र हो गया। जहाँ - तहाँ हिन्दी का भी प्रचार चलता था। कवि सम्मेलन होते थे तो क्रास्थवेस्ट से मैडम हमको साथ लेकर जाती थीं। हम कविता सुनाते थे। हरिऔध जी अध्यक्ष होते थे, श्रीधर पाठक होते थे, कभी रम्नाकर जी होते थे, कभी कोई होता था। कब हमारा नाम पुकारा जाए, बेचैनी से सुनते रहते थे। मुझको प्राय: प्रथम पुरस्कार मिलता था। सौ से कम पदक नहीं मिले होंगे उसमें।

एक बार घटना की की याद आती है कि एक कविता पर मुझे चाँदी का एक कटोरा मिला। बड़ा नक्काशीदार, सुंदर । उस दिन सुभद्रा नहीं गईं थीं। सुभद्रा प्राय: नहीं जाती थीं कवि सम्मेलन में। मैंने उनसे आकर कहा, 'देखो, यह मिला।'

सुभद्रा ने कहा, 'ठीक है, अब तुम एक दिन खीर बनाओ और मुझको इस कटोरे में खिलाओ।'

उसी बीच आनंद भवन में बापू आए। हम लोग तब अपने जेब-खर्च में से हमेशा एक-एक, दो-दो आने देश के लिए बचाते थे और जब बापू आते थे तो वह पैसा उन्हें दे देते थे। उस दिन जब मैं बापू के पास गई तो अपना कटोरा भी लेती गई। मैंनें निकालकर बापू को दिखाया। मैंने कहा, 'कविता सुनाने पर मुझको यह कटोरा मिला है।' कहने लगे, 'अच्छा, दिखा तो मुझको।' मैंने कटोरा उनकी ओर बढ़ा दिया तो उसे हाथ में लेकर बोले , 'तू देती है इसे?' अब मैं क्या कहती? मैंने दे दिया और लौट आई। दुख यह हुआ कि कटोरा लेकर कहते, कविता क्या है? पर कविता सुनाने को उन्होंने नहीं कहा। लौटकर अब मैंने सुभद्रा जी से कहा कटोरा तो चला गया। सुभद्रा जी ने कहा, 'और जाओ दिखाने!' फिर बोलीं, देखो भाई, खीर तो तुमको बनानी होगी। अब तुम चाहे पीतल की कटोरी में खिलाओ, चाहे फूल के कटोरे में – फिर भी मुझे मन ही मन प्रसन्नता हो रही थी कि पुरस्कार में मिला अपना कटोरा मैंने बापू को दे दिया।

सुभद्रा जी छात्रावास छोड़कर चली गईं । तब उनकी जगह एक मराठी लड़की जेबुन्निसा हमारे कमरे में आकर रही। वह कोल्हापुर से आई थी। जेबुन मेरा बहुत-सा काम कर देती थी। वह मेरी डेस्क साफ कर देती थी, किताबें ठीक से रख देती थी । और इस तरह मुझे कविता के लिए कुछ और अवकाश मिल जाता था। जेबुन मराठी शब्दों में मिली जुली हिन्दी बोलती थी। मैं भी उससे कुछ-कुछ मराठी सीखने लगी थी। वहाँ एक उस्तानी जी थीं – ज़ीनत बेगम। ज़ेबुन जब 'इकड़े-तिकड़े' या 'लोकर-लोकर' जैसे मराठी शब्दों को मिलाकर कुछ कहती तो उस्तानी जी से टोके बिना रहा नहीं जाता था–'वाह! देसी कौवा, मराठी बोली!' जेबुन कहती थी, 'नहीं उस्तानी जी, यह मराठी कौवा मराठी बोलता है।' जेबुन मराठी महिलाओं की तरह किनारीदार साड़ी और वैसा ही ब्लाऊज पहनती थी। कहती थी, 'हम मराठी हैं तो मराठी बोलेंगे !'

उस समय यह देखा मैने कि साम्प्रदायिकता नहीं थी। जो अवध की लड़कियाँ थी, वे आपस में अवधी बोलती थीं; बुंदेलखंड की आती थीं वे बुंदेली में बोलती थीं। कोई अंतर नहीं आता था और हम पढ़ते हिंदी थे। उर्दू भी हमको पढ़ाई जाती थी, परंतु आपस में हम अपनी भाषा में ही बोलती थीं। यह बहुत बड़ी बात थी। हम एक मेस में खाते थे, एक प्रार्थना में खड़े होते थे; कोई विवाद नहीं होता था।

मैं जब विद्यापीठ आई तब तक मेरे बचपन का वही क्रम चला जो आज तक चलता आ रहा है। कभी – कभी बचपन के संस्कार ऐसे होते हैं कि हम बड़े हो जाते हैं, तब तक चलते हैं। बचपन का एक और संस्कार भी था हम जहाँ रहते थे वहाँ जवारा के नवाब रहते थे। उनकी नबाबी छिन गई थी। बेगम साहिबा कहती थीं। 'हमको ताई कहो!' हम लोग उनको 'ताई साहिबा ' कहते थे। उन के बच्चे हमारी माँ को चाची जान कहते थे। हमारे जन्मदिन वहाँ मनाए जाते थे। उनके जन्मदिन हमारे यहाँ मनाए जाते थे। उनका एक लड़का था उसको राखी बाँधने के लिए वे कहती थीं। बहनों को राखी बाँधनी चाहिए। राखी के दिन सवेरे से उसको पानी भी नहीं देती थीं, राखी के दिन बहनें राखी बाँध जाएँ तब तक भाई को निराहार रहना चाहिए। बार-बार कहलाती थीं कि 'भाई भूखा बैठा है, राखी बँधवाने के लिए।' फिर हम लोग जाते थे। हमको लहरिए या कुछ मिलते थे। इसी तरह मुहर्रम में हरे कपड़े उनके बनते थे तो हमारे भी बनते थे। फिर एक हमारा छोटा भाई हुआ वहाँ, तो ताई साहिबा ने पिताजी से कहा, ' देवर साहब से कहो, वो मेरा नेग ठीक करके रखें। मैं शाम को आऊँगी।' वे कपड़े-वपड़े लेकर आईं। हमारी माँ को दुल्हन कहती थीं। कहने लगीं दुल्हन, जिनके ताई-चाची नहीं होतीं वो अपनी माँ के कपड़े पहनते हैं, नहीं तो छः महीने तक चाची – ताई पहनाती हैं। मैं इस बच्चे के लिए कपड़े लाई हूँ। यह बड़ा सुन्दर है। मैं अपनी तरफ से इसका नाम 'मनमोहन' रखती हूँ।

वही प्रोफेसर मनमोहन वर्मा आगे चलकर जम्मू यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर रहे, गोरखपुर यूनिवर्सिटी के भी रहे। कहने का तात्पर्य यह कि मेरे छोटे भाई का नाम वही चला जो ताई साहिबा ने दिया । उनके यहाँ भी हिन्दी चलाई जाती थी, उर्दू भी चलती थी। यों, अपने घर में वे अवधी बोलती थीं। वातावरण ऐसा था उस समय कि हम लोग बहुत निकट थे। आज की स्थिति देखकर लगता है, जैसे वह सपना ही था। आज वह सपना खो गया।

शायद वह सपना सत्य हो जाता तो भारत की कथा कुछ और होती।

अभ्यास

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. महादेवी वर्मा ने अपने बचपन में सबसे पहली कौन सी पुस्तक पढ़ी?
2. छात्रावास में महादेवी वर्मा की पहली साथिन कौन थी?
3. लेखिका के भाई का नामकरण किसने किया था?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पुरस्कार में मिले चाँदी के कटोरे को देकर लेखिका को दु:ख के साथ-साथ प्रसन्नता क्यों हुई?
2. लेखिका और सहेलियाँ अपने जेब खर्च से पैसे क्यों बचाती थी?
3. लेखिका की ताई साहिबा उनके भाई के जन्म पर कपड़े लेकर क्यों आईं थीं?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. लेखिका ने अपनी माँ की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?
2. लेखिका के बचपन के दिनों के सामाजिक तथा भाषायी वातावरण का चित्रण कीजिए।
3. परिवारों में लड़कियों के साथ कैसा व्यवहार होना चाहिए?
4. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ, प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए –

   (क) हम हिन्दी ..... नहीं होता था।

   (ख) उनके यहाँ भी ..... सपना खो गया।

5. **निम्नलिखित पंक्तियों का भाव पल्लवन कीजिए** –

   (क) बचपन की स्मृतियों में एक विचित्र-सा आकर्षण होता है।

   (ख) परिस्थितियाँ सदैव एक सी नहीं रहती हैं।

6. **''शायद वह सपना सत्य हो जाता तो भारत की कथा कुछ और होती'' कथन के आधार पर भारत की वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों पर प्रकाश डालिए ।**

भाषा अध्ययन-

1. **निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए -**

अनंत, निरपराधी, दण्ड, शांति

2. **निम्नलिखित शब्दों के सामने दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प का चयन कीजिए-**

(अ) निराहारी	-	(निर्+आहार+ई)	(निरा+हारी)	(निराह+आरी)
(आ) अप्रसन्नता	-	(अप्र+सन्नता)	(अ+प्रसन्नता)	(अ+प्रसन्न+ता)
(इ) अपनापन	-	(अप+नापन)	(अपन+आपन)	(अपना+पन)
(ई) किनारीदार	-	(कि+नारी+दार	(किनारी+दार)	(किना+रीदार)

3. **निम्नलिखित शब्दों में से तत्सम, तद्भव तथा विदेशी शब्द पहचान कर लिखिए-**

दर्जे , मेज, जेब, छात्रावास, मित्र, होस्टल, प्रथम, कटोरा, भवन, खर्च, खीर, द्वंद, कपड़े, सपना

और भी जानें:-

पिछले पाठ में द्विरुक्ति के विषय में आप जान चुके हैं। द्विरुक्ति का आशय दोहराना है। इसमें एक शब्द की आवृति होती है। पुनरूक्त शब्द में द्विरुक्ति की स्थिति भी बन जाती है।

ध्यान दीजिए -

द्विरुक्ति और पुनरुक्त शब्दों में अन्तर भी है द्विरुक्ति में एक ही शब्द की दो बार आवृत्ति होती है क्तिु पुनरूक्त शब्दों में एक ही शब्द के अतिरिक्त अपूर्ण, प्रति ध्वन्यात्मक और विलोम शब्द भी आ सकते है। इसलिए पुनरुक्त शब्दों का चार श्रेणियों में रखा जा सकता है-

1. **पूर्ण पुनरुक्त शब्द**- इसमें पहली इकाई ही दूसरी इकाई के रूप में ज्यो की त्यों आती है। जैसे - धीरे-धीरे,
2. **अपूर्ण पुनरुक्त शब्द**- जहाँ शब्द युग्म में दूसरी इकाई पहली इकाई से बना कोई रूप धारण कर आती है, वहाँ अपूर्ण पुनरुक्त शब्द होते है। जैसे- सीधा-सादा, भोला- भाला।
3. **प्रति ध्वन्यात्मक शब्द**- इसमें दूसरा शब्द पहले की प्रतिध्वनि होता है। जैसे चाय-वाय, झट-पट, छम-छम, खट-पट।
4. **भिन्नात्मक शब्द**- इस प्रकार के शब्द युग्म में प्रत्येक शब्द भिन्न अर्थ रखने वाला होता है। जैसे- पढ़ाई-लिखाई, एक-दो, हानि-लाभ।

विशेष–शब्द युग्म में दो शब्दों के बीच योजक चिह्न (–) का प्रयोग होता है। जैसे– कभी–कभी, एक–दो आदि।

4. निम्नलिखित शब्द युग्मों में से पूर्ण पुनरूक्त,अपूर्ण पुनरूक्त ,प्रति ध्वन्यात्मक शब्द और भिन्नार्थक शब्द छाँटकर लिखिए–

पहले–पहल, रोने–धोने, सुन–सुन, प्रचार–प्रसार, जहाँ–तहाँ, कुछ–कुछ, कपड़े–वपड़े, इकड़े–तिकड़े, बार–बार, मिली–जुली, ताई–चाची।

5. निम्नलिखित शब्दों के बीच योजक चिह्न (–) का प्रयोग किस स्थिति को स्पष्ट करता है ?

कुल–देवी, दुर्गा–पूजा, जेब–खर्च, कवि–सम्मेलन,

योग्यता विस्तार

1. महादेवी वर्मा जी के इस संस्मरण को पढ़कर आपके मन में जो अपने बचपन की स्मृति आई उसे संस्मरण शैली में लिखिए।
2. चांदी का कटोरा के स्थान पर यदि कोई कीमती वस्तु आपको पुरस्कार स्वरूप मिलती तो आपकी क्या प्रतिक्रिया होती?
3. महादेवी वर्मा के अन्य संस्मरण अपने पुस्तकालय से प्राप्त करके पढ़िए।
4. यदि महादेवी वर्मा का सपना सच हो जाता तो आज का भारत कैसा होता? अपने शब्दों में लिखिए।

शब्दार्थ

इकड़े–तिकड़े–इधर उधर, **लोकर–लोकर** – मराठी मूल शब्द अर्थात् जल्दी–जल्दी, **नेग**– मांगलिक अवसरों पर सगे संबंधियों को उपहार देने की रस्म।

***